सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जुलाई-अगस्त 2019

परमेश्वर के विचारों को महत्व देना

भजन 139:17: " और मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है।। "

हम इस दुनिया में बहुत सी चीजों को महत्व देते हैं। लेकिन यह भजनकार परमेश्वर के विचारों को महत्व देता है। आप अपने जीवन में किन बातों को महत्व देते हैं? हम जानते हैं कि दुनिया को बनाने वाली पहली चीज़ परमेश्वर की सोच थी। लेकिन दुनिया के अस्तित्व में आने से पहले, यह कलाकारी परमेश्वर का विचार था। आपके विचार कैसे हैं? क्या वे परमेश्वर के हैं? यदि वे परमेश्वर के हैं, तो आपका पूरा जीवन चट्टान पर बनेगा। क्या आप परमेश्वर के विचारों के खिलाफ अपने विचारों की जांच करने के लिए सावधान हैं? मान लीजिए कि कुछ अजीब विचार आपके अंदर आते हैं। ऐसा ही एक विचार आपके जीवन को बर्बाद कर सकता है। हमें सावधान

.....मुक्ति देनेवाला प्यार.. पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

विश्वास का आधार- विनम्रता और टूटापन

"हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।" (भजन 51:10)।

बहुत से लोगों को, धर्म आज अस्पष्ट रूप से चिह्नित रास्तों की भूलभुलैया की तरह दिखाई देता है। बहुत बार ये आड़े-तिरछे मार्ग अंतहीन दिखाई देते हैं और इनका कोई निश्चित गंतव्य नहीं होता है। आवाज़ों और विचारों के इस एक भ्रमित बकवाद का सामना करना बहुत ही गूढ़ और मूर्खता है, कई निराश होकर पीछे हट जाते हैं और अन्य लोग घृणा में। इन जुझारू और असंगत रूप से विरोधाभासी दर्शन शास्त्र के बीच, हर व्यक्ति एक सौ प्रतिशत सही होने का दावा करता है, कोई भी व्यक्ति सच्चाई कैसे पा सकता है? जीवित परमेश्वर ने अपनी महान बुद्धि और दया के कारण हमें ठोकर खाने और धार्मिक भ्रम के इस धुंधले अंधेरे के माध्यम से टटोलने नहीं छोड़ा है।

दुनिया छोड़ने से पहले, प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से वादा किया कि यह समीचीन था कि उन्हें दुनिया छोड़नी थी ताकि वह पवित्र आत्मा को उनकी सारी सच्चाई में अगुवाई करने के लिए भेज सकें। प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा को सत्य का आत्मा कहा है। हालांकि, उन्होंने कहा कि दुनिया उन्हें ग्रहण नहीं कर सकती है, "क्योंकि यह उन्हें नहीं देखता, न ही उन्हें जानता है "(यूहन्ना 14:17)। इसके द्वारा प्रभु यीशु का अर्थ था कि पवित्र आत्मा टूटे-फूटे, नम्र और शिष्यता के मार्ग पर उत्साह से चलने वालों का मार्गदर्शन करेगा। एक पूर्ण और महान सच्चाई में इन लोगों की अगुवाई की जाएगी और उनके जीवन में कोई धार्मिक भ्रम न होगा।

पवित्र आत्मा लोगों को उनके पाप का दोषी भी ठहराता है और उन्हें मुक्ति के मार्ग में ले चलता है। इस प्रकार एक घोर पापी यीशु मसीह के क्रूस पर अपना रास्ता खोजने में सक्षम है जहां प्रकाश की एक बढ़ती बाढ़ उनका इंतजार करती है। अब वह एक टटोलने वाला, ठोकर खाने वाला और लड़खड़ाता इंसान नहीं है। मसीह का रक्त और क्रूस का प्रेम उनके विचलित मन को मुक्त करता है और उनकी गुलाम आत्मा को मुक्त करता है और उस व्यक्ति को परमेश्वर के बच्चे में बदल देता है!

मन में यह रखना चाहिए कि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।" (याकूब 4:6)। ऐसे लोगों से मिलना एक आम है, जिनके पास केवल एक संदिग्ध धार्मिक अनुभव है, जो कि बहुत ही असाधरण घमंड से भर जाते हैं और अत्यधिक प्रचारित अनुभव के कारण बढ़-चढ़ कर बातें करते हैं। जब एक व्यक्ति परमेश्वर की सच्ची रोशनी से भरा है, तो वह कभी भी प्रसिद्धि नहीं ढूँढता और यहां तक कि

लोक प्रसिद्धि से नफरत करता है। प्रचार के साधन (मीडिया) धार्मिक घटनाओं की बातों में चाह रखते हैं जो कुछ नए अनुभव का दावा करते हैं और जिनके दावे उनके जीवन की चतुराई से छिपी असंगति से झूठे साबित होते हैं।

जब आप धार्मिक धोखेबाजों के साथ रहते हैं, तो इतने भोले मत बनो कि आप कहने लगे कि ईसाई धर्म बकवासो का एक बड़ा ढेर है। कितनी भयंकर बात है कि कुछ समुदायों में ईसाई धर्म की बहुत चर्चा होती है और ऐसे लोग जो धार्मिक उत्साह के भावनात्मक उछाल के कारण ऊँचाई पर चढ़ जाते हैं और फिर भी सच्चे, स्थिर गवाह नहीं हैं, इनके जीवन और फल उनके बारे में लिए बोलते हैं!

राजा दाऊद परमेश्वर से रोकर प्रार्थना करता है, "हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।" भटक जाने के बाद और मानसिक उत्साह के कारण परमेश्वर की उपस्थिति खो दी, जिसे उसने चाहा, हालांकि वह पूरी तरह से जानता था कि व्यभिचार करना सच्चे और जीवित परमेश्वर के खिलाफ गंभीर अपराध था,और उसने सचमुच एक टूटे पिसे मन से प्रभु को पुकारा: "मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से पैदा कर।" मुख्य रूप से आज के उथले ईसाई धर्म के बीच दाऊद की इस पुकार की बहुत जगह है।

एक सही आत्मा की पहचान टूटे दिल से जानी जाती है। एक सही आत्मा को प्रार्थना करने में कठिनाई नहीं होती है। एक सही आत्मा स्वर्ग से जुड़ी है। एक सही आत्मा को परमेश्वर के वचन, बाइबल के लिए गहरा प्यार है। एक सही आत्मा की सही प्राथमिकताएँ होती हैं। निःसंदेह प्रार्थना और बाइबल का अध्ययन सबसे ऊपर है। एक सही आत्मा परमेश्वर की इच्छा को अपना बहुत अति आवश्यक खजाना मानती है। यह उस इच्छा को खोजता है और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए वह सभी दाँव रखता है। एक सही आत्मा अपने सभी व्यवहारों में निष्पक्ष है; यह पूर्वाग्रह और कट्टरता से मुक्त है। एक आदमी या औरत जिसका दिल साफ है और जिसके पास सही आत्मा है, वह परमेश्वर के साथ एक अटूट संगति का आनंद लेता है।

एक सही आत्मा वाले इंसान का हृदय विशाल है जो कि यीशु की महिमा करने की चाह रखता है। यह केवल एक भावना नहीं है, बल्कि परमेश्वर के काम को देखने की बड़ी लालसा है। दूसरे शब्दों में, एक सही आत्मा वाला व्यक्ति कभी भी आत्मिक जागृति से बहुत दूर नहीं है। या तो उस व्यक्ति के आस-पास आत्मिक जागृति फूट पड़ती है या उसको जागृत करती है। वह जिस किसी परिस्थिति में जाता है, उसमें परमेश्वर की उपस्थिति लेकर जाता है। उसके पास कुछ रहस्य हैं और एक खुला व्यक्तित्व है।

मेरे दिल का गहरा बोझ है कि हर जगह मेरे पाठकों के बीच एक टूटा और पिसा मन हो – एक सही आत्मा- ताकि परमेश्वर उनके माध्यम से काम कर सकें। मैं कुछ जगहों पर जागृति को कम होता देखता हूँ। और कुछ जगहों पर जागृति की नयी शक्ति के उद्गार और आशीषों का गवाह हूँ। निरंतरता जागृति है और इस जागृति को नयी जगहों पर ले जाना सबसे प्रमुख काम है।

जहां बुड़बुड़ाहट,झगड़ा, या चुगली करना जैसी बातें हैं, जागृति तेजी से समाप्त हो जाती है। जब किसी भी स्थान, सहभागिता, या चर्च में प्रार्थना की आत्मा नीचे जाती है, वहाँ बातों की अधिकता और कई समितियों ऊपर आ जाती हैं। छोटी बातों को बढ़ा चढ़ाकर कहना लोगों में झगड़े और आंदोलन का कारण बन जाती हैं। एक-दूसरे के प्रति उत्कट प्रेम, जो एक बार प्रचलित हुआ और सहज दक्षता से उत्पन्न हुआ, गायब हो जाता है। इस तरह की स्थिति में परमेश्वर के लिए महिमा बहुत कम है।

महान प्रचारक भी इस सही आत्मा को खो सकते हैं। आज की दुनिया एक प्रचारक को एक व्यवसायी व्यक्ति के सांचे में दबाने का प्रयास करती है जिसे कि चतुर सुधार का एक विचार माना जाता है! लेकिन एक उपदेशक, जिसके मन में पैसा उसके काम के लिए एक महत्वपूर्ण सहायक बनना शुरू हो जाता है, जल्द ही वह अपने भविष्यसूचक आवेग को खो देता है और एक बहुत ही सांसारिक और शक्तिहीन प्राणी बन जाता है।

आज के अधिकांश मसीहियों के पास परमेश्वर से इतना कम प्रकाश और ईश्वरीय ज्ञान है कि वे स्पष्ट रूप से एक अंग पर बहुत दूर हैं और परमेश्वर की बहुत कम शक्ति रखते हैं। ऐसे लोग अपने चारों ओर केवल उजाड़ और मौत पैदा करते हैं।

यह आत्म संतुष्टि का समय नहीं है। प्रिय पाठक, धार्मिकता के प्रति जाग्रत

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

हो और पाप न करो! परमेश्वर आपका इस्तेमाल करना चाहता है। लेकिन आपको सबसे पहले एक टूटी-फूटी और पिसी आत्मा की जरूरत है। हमारे चारों ओर सूचना के सभी स्रोत आपको कठिन, असंवेदनशील, स्वार्थी, धन-दौलत के पीछे चलने वाले और विश्व-उन्मुख बनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, आप अपने आप को ऐसे स्थान पर रख रहे हैं जहाँ परमेश्वर आपसे बात भी नहीं कर सकता है! इसमें आश्चर्य नहीं कि आपका दिल ठंडा है, आपका सिर बहुत भारी है और आपका रास्ता इतना अस्पष्ट है। एक टूटी-फूटी आत्मा से यीशु मसीह को पकड़ें और आप अपने जीवन में विजय पाने के लिए नई ताकत पाएंगे, आपके घर में नई शांति और आपके आस-पास जहाँ आप रहते हैं और काम करते हैं, नई आशीषें पाएंगे। प्रिय प्रभु आपको स्पर्श कर आशीर्वाद दें।

—जोशुआ दानियल

.... मुक्ति देनेवाला प्यार पृष्ठ 1 से

रहना चाहिए कि हमारे पास जो विचार हैं वे पूरी तरह से परमेश्वर के हैं। एक बार एक विचार अहाब के मन में आया। वह नाबोत की दाख की बारी को लेना चाहता था। कई तरीकों से, वह अपने बगीचे में सुधार कर सकता था। लेकिन वह एक विचार उसके परिवार और राज्य की बर्बादी का कारण था। अपने विचारों के प्रति सावधान रहें। जब अहाब अपने मकसदों को हासिल नहीं कर सका, तो उसकी पत्नी उसकी मदद करने आई। एक बुद्धिमान पत्नी पति से पूछती है, "तुम जमीन क्यों चाहते हो? क्या यह परमेश्वर का विचार है? अगर यह परमेश्वर का विचार नहीं है तो यह हमारे परिवार को बर्बाद कर सकता है।" लेकिन अहाब ने एक महिला को गैर मसीही घर से चुना था। वह एक मूर्तिपूजा करने वाली महिला थी। वह उसे कभी भी प्रभु के मार्गों की सलाह नहीं दे सकी। अगर एक पत्नी सही तरीके से पति को सलाह नहीं दे सकती है, तो पूरा परिवार उजड़ जाएगा। आप अपने जीवन साथी को कहाँ से चुनते हैं? क्या यह एक ऐसे घर से है जहाँ परमेश्वर का वचन राज करता है? हमारे ईसाई घर आमतौर पर परमेश्वर के वचन द्वारा पूरी तरह से शासित नहीं होते हैं, लेकिन हम घर पर दुनिया के पीछे चलते हैं। हम कहते हैं, "ठीक है, यह परमेश्वर का वचन हो सकता है। फिर भी हम इस दुनिया में रहते हैं। हमें बुद्धिमान बनना चाहिए "। इसी तरह लोग जीते हैं। दाऊद कहता है, "तेरे विचार कितने अनमोल हैं! उनका कुल योग पूरी तरह से मेरे लिए एक आशीर्वाद है! " एक सच्चा ईसाई कुछ भी नहीं है, लेकिन परमेश्वर के विचारों की एक गठरी है। वह उन विचारों से कभी नहीं मुड़ता।

यशायाह 51:16: " मैं ने तेरे मुंह में अपने वचन डाले", 7, 8: " हे धर्म के जानने वालो, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; " यदि आप परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखते हैं, तो आशीर्वाद पीढ़ी-पीढ़ी चलता रहता है। जब हम एक घर बनाते हैं, तो हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे और बच्चों के बच्चे इससे लाभान्वित हों। लेकिन अगर आप परमेश्वर के वचन को अपने दिल में रखते हैं और अपने आप को परमेश्वर की आज्ञाओं के अधीन रखते हैं, तो आशीर्वाद अनेक पीढ़ियों तक प्रवाहित होता है। आपका घर गिर सकता है, लेकिन परमेश्वर के वचन का पालन करके आपने जो आश्रय बनाया है वह कभी नहीं गिरेगा।

अब्राहम ने परमेश्वर का वचन सुना। वह एक मूर्तिपूजा करने वाले घर से आया था, लेकिन जब परमेश्वर ने उसे बुलाया, तो उसने आज्ञा मान ली। एक एक करके उनके गैर ईसाई विचारों को परमेश्वर के विचारों में बदल दिया गया। अब्राहम ने परमेश्वर का वचन प्राप्त किया और एक घर बनाया। वह घर अद्भुत था और आज तक कायम है।

उसके चार सौ साल बाद, फिरौन अपने बच्चों को अपना गुलाम बनाना चाहता था। परमेश्वर ने फिरौन को चेतावनी दी: "सावधान रह कि तू परमेश्वर के देश के साथ क्या करता है। अगर तू उन्हें सताता है, तो परमेश्वर तेरे बच्चों को नष्ट कर देंगे। आपकी पूरी सेना नष्ट हो जाएगी। "जब एक राजा अपनी सेना को खो देता है, तो वह किसका सहारा लेता है? किसी का भी नहीं।

नबूकदनेस्सर इस्राएलियों को पीसने के कठिन काम में डालना चाहता था, लेकिन इसके कुछ ही तरीके थे। परमेश्वर ने अनाज्ञाकारी इस्राएलियों को आज्ञाकारिता और अनुशासन सिखाने के लिए नबूकदनेस्सर को चुना। परमेश्वर ने यिर्मयाह से इस आनेवाली स्थिति का खुलासा किया। "मैं तुम्हें वहाँ सिखाऊँगा। अब तुम इसे सीखने योग्य नहीं हो। परमेश्वर ने कहा, "बाबुल की भूमि में तुम एक श्रेष्ठ राष्ट्र होगे"। परमेश्वर की रहस्यमय बातों का खुलासा करना ही अब्राहम के बच्चों की विशिष्ट विशेषता थी। उनका जीवन वास्तव में उनके आसपास के लोगों के जीवन से बेहतर था। परमेश्वर ने बाबुल में परमेश्वर की वास्तविकता को साबित करने के लिए शद्रक, मेशक और अबेदनगो को चुना।

वास्तव में इन लोगों के हुक्म को उस राज्य ने माना था। परमेश्वर के विचार का वहां सम्मान किया गया। यदि आप एक ईसाई हैं, तो आपके वरिष्ठ आपका सम्मान करेंगे। यदि आप एक ऐसी बहू हैं जो प्रभु से प्यार करती है, तो आपकी सास आपकी बात का सम्मान करेगी। यदि आप स्कूल या कॉलेज में सिर्फ एक सहायक हैं, तो एक दिन ऊँचे पद के लोग आपका सम्मान करेंगे क्योंकि प्रभु आपके साथ है। मैंने ऐसी चीजें होते

देखी हैं। जब आप परमेश्वर के विचारों से भरे होते हैं, तो आप जहां भी होंगे, आप एक नेता होंगे। भक्त पौलुस एक बड़े जहाज में था। वह वहां एक कैदी था। लेकिन वह कप्तान का मार्गदर्शन कर रहा था। जहाज का मार्गदर्शन करने में खगोल विज्ञान और निर्णय लेने के बारे में पॉल को क्या पता था? उसने जो कुछ कहा, सफल रहा। शुरुआत में कप्तान ने उसकी बात की परवाह नहीं की। लेकिन आखिर में पौलुस के वचन उनका मार्गदर्शन करने वाले बन गये।

"तेरे विचार कितने अनमोल हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है! " क्या आप उन्हें महत्व देते हैं? जब आप सुबह बाइबल पढ़ते हैं, तो क्या आप इसे दिनचर्या के रूप पढ़ रहे हैं? परमेश्वर आपके विचारों को दूर कर और उन्हें अपने विचारों से बदलना पसंद करता है। जैसे आप बड़े होते हैं, तुम उसके विचारों से अधिक भर जाते हो। एक बच्चे के रूप में, आप परमेश्वर के वचन का पाँच प्रतिशत हिस्सा ले सकते हैं, लेकिन पंद्रह साल की उम्र में आप बीस प्रतिशत लेंगे। पच्चीस वर्ष की आयु में, आपके पास परमेश्वर के विचारों का प्रतिशत पचास होगा। इस्राएल के राजाओं को परमेश्वर के नियमों की नकल करने का आदेश दिया गया था ताकि वे परमेश्वर के वचन को जान सकें। यदि किसी देश का राजा परमेश्वर के वचन को जानता है और उस ज्ञान से उसका मार्गदर्शन करता है, तो उस तरह वह देश समृद्ध हो जाएगा। निन्यानबे वर्ष की आयु में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "अब्राहम, तुम मेरे विचारों से सौ प्रतिशत नहीं भरे हो।" (उत्पत्ति 17: 1)।

सबसे पहली बात है कि हम परमेश्वर के वचन को महत्व नहीं देते हैं। यह हमारे भीतर नहीं घुसता। अंधेरा हमें घेर लेता है। शैतान यह देखता है कि परमेश्वर का वचन हमारे अंदर न जाए। कई ईसाई घरों में एक तरह का अंधकार होता है। एक बार स्विट्जरलैंड में एक युवक ने अपने शरीर पर कुछ अजीब सी चीज तो बढ़ते देखा और वह स्वस्थ होना चाहता था। वह एक ज्योतिषी के पास गया और उसने जैसा कहा वैसा ही किया। वह ठीक हो गया, लेकिन एक बुरी आत्मा ने उसे पकड़ लिया और उसकी समझ को ऐसा बना दिया कि वह बाइबल को समझ नहीं पाया। स्वस्थता के लिए कितनी बड़ी कीमत! दाऊद प्रार्थना करता है, "परमेश्वर, मुझे मेरी जवानी के पापों से मुक्ति दिलाओ।" बुराई के विचार उस पर हावी हो रहे थे। व्यभिचारी विचार! वह पाप में गिर रहा था। उसने अच्छा बनने की कोशिश की लेकिन नहीं बन सका। हे माता-पिता, यदि आप बुराई करते हैं, तो आपके बच्चे पाप में गिर जाएंगे। आप मुझे बताएं, "मेरे पास बुरे विचार हैं।" अपने आप को परखें। कुछ माता-पिता ने अपने बच्चों का बहुत नुकसान किया है। उस स्विस लड़के ने अच्छा बनने के लिए एक महिला से शादी की। लेकिन उसका दुख बढ़ता गया। वह मरना चाहता था। एक बार, वह और उसकी पत्नी दोनों बीमार पड़ गए। अपनी बीमारी में भी वह इससे बाहर आने की तलाश रहा था। परमेश्वर ने एक छोटी से किताब उसको भेजी।। सच्चाई उस पर हावी हो गई। उसने दुष्ट आत्माओं से सलाह लेने के पाप को मान लिया और परमेश्वर ने उसे माफ कर दिया। फिर उसे जय मिली। मसीह हमारा मुक्तिदाता है। क्रूस में में जीत है। जो शेर की तरह हिंसक माता-पिता हैं, वे अपने बच्चों के झूठे नेता हैं। क्या आपके सभी विचार परमेश्वर के विचार हैं? क्या आप अपने विचारों की जाँच परमेश्वर के विचारों से करते हैं?

जीवन के आरंभ में, अबशालोम के पास एक गलत सोच थी। वह अपने पिता का सिंहासन चाहता था। उसे परमेश्वर का कोई भय नहीं था। गलत होने पर भी दाऊद उससे प्यार करता था। अबशालोम ने अपने भाई की हत्या कर दी थी, लेकिन दाऊद ने उसके प्रति करुणा दिखाई और उसे चूमा। यह एक गलत चुंबन था – पाप से मन न फिराये एक बेटे का चुंबन। हम में से अनेक अपने बच्चों को इस तरह चूमकर उन्हें नरक की ओर ले जाते हैं। हमें उनकी निगरानी करनी चाहिए। उनके गलत विचार हैं। मेरे बच्चों द्वारा कहा गई कुछ बातें गलत हैं और मैं उन्हें सही करता हूं। वे परमेश्वर के नहीं हैं। उन्हें गुस्सा आ सकता है; लेकिन गलत विचारों पर मुस्कुराने से हम उनकी मदद नहीं कर सकते। फिर मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूं। परमेश्वर उन्हें उन विचारों को छोड़ देने में मदद करता है।

दाऊद जानता था कि उसका जीवन परमेश्वर के हाथ में सुरक्षित था लेकिन अबशालोम कहाँ था? दाऊद ने अपनी खारित कप्तान को अबशालोम से धीरे से निपटने के लिए उकसाया था। क्या वे अबशालोम को बचा सके। परमेश्वर के वचन को सिखाने के अलावा ,धरती की कोई भी ताकत आपके बच्चों को नहीं बचा सकती है। कई नौजवान परमेश्वर की इच्छा के बाहर जाकर शादी करते हैं। यदि आप पूछते हैं, "आप उस लड़की से शादी क्यों करते हैं?", तो वे कहते हैं, "मैं उसे बदल दूंगा।" लेकिन सच्चाई तो यह है कि वह आपको बदल देगी। कई लोगों ने इस तरह के फैसलों के कारण अपना पहला प्यार खो दिया। उन्हें बहाल नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर

सत्य की परख!

"'"वैसे ही मसीह भी, बहुतों के पापों को उठाने के लिए एक बार बलिदान होकर, दूसरी बार प्रकट होगा। पाप उठाने के लिए नहीं, परन्तु उनके उद्धार के लिए जो उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करते हैं।" (इब्रानियों 9:28)

के वचन से भरे रहो।

यशायाह (51: 21-22) परमेश्वर आपके दुश्मनों को दुख का कटोरा देते हैं। शैतान हमेशा आपके जीवन और घर में प्रवेश करने के लिए देख रहा है। लेकिन जब तक आप परमेश्वर की इच्छा की तलाश कर रहे हैं, और परमेश्वर के वचन का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर उसका पालन करते हैं, आपका जीवन दोपहर के उजाले के समान और उज्जवल बन जाएगा। लोग आपकी उन्नति पर आश्चर्यचकित होंगे। दुष्टों के सभी विचार विफल हो जाएंगे। जो दानिय्येल को नष्ट करना चाहते थे, वे शेरों के मुंह में गिर गए। बेबीलोन के राजा दानिय्येल की बात सुनने लगे। यहाँ तक कि पराक्रमी राजा नबूकदनेस्सर को दानिय्येल ने फटकार लगाई! (दानिय्येल 4:25-27)।

यदि आप वचन का पालन करते हैं, तो आपको अधिक से अधिक नैतिक साहस मिलेगा। आप एलिय्याह की तरह कहेंगे, जिसने अहाब से कहा, "जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लहू चाटेंगे, यहाँ तक कि तेरा।" आप केवल अपने आप को परमेश्वर के वचन के अधीन करते रहें। तब आप उजड़ी जगहों का निर्माण करेंगे। टिड्डियों और येलेक द्वारा बर्बाद किये वर्षों को परमेश्वर फिर से बहाल करेंगे। खुद को परखें। देखें कि परमेश्वर का वचन आपके दिलों में कितना राज कर रहा है। क्या यीशु मसीह, परमेश्वर का वचन, आप में सौ प्रतिशत राज करता है? यीशु ने कहा, "मैं हमेशा वह काम करता हूं जो मेरे पिता को खुश करता हैं,"। वह चाहता है कि हम भी ऐसा करें। उनके कई शिष्यों ने उन्हें छोड़ दिया क्योंकि उन्होंने कहा कि यह कठिन था। लेकिन पतरस ने कहा, "हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। " (यूहन्ना 6:68)।

यशायाह 66:3,4 "जिस से मैं अप्रसन्न होता था उसी को उन्होंने अपनाया"। परमेश्वर आपकी पसंद को देखता है। वह इन बातों से दुःखी है: "अरे मेरे बच्चे का क्या होगा?" आप भड़कीले कपड़े चुनते हैं। ठीक है, लेकिन जब शैतान उस पोशाक के माध्यम से आप पर हमला करता है, तब क्या आप उस से लड़ पाएंगे? जो कुछ भी आप चुनते हैं, वह आपको परमेश्वर के लिए पास आने में रुकावट का कारण न हो। आप ऐसा पद चुनते हैं जिससे सभी आपका आदर करें। तब शायद आप ऐसे लोगों से जुड़ते हैं जिन्हें परमेश्वर का कोई डर नहीं है। एक दिन तुम भी उनकी तरह बन जाओगे। आप परमेश्वर की सेवा के लिए बहुत पैसा तो दे सकते हैं। लेकिन तुम खो जाओगे।

आपके लिए परमेश्वर के विचारों को जानना कितना अच्छा है! जब अब्राहम को फिलिस्तीन दिखाया गया, तो यह एक जंगल था। लूत ने एक अच्छी जगह चुनी; लेकिन लूत ने जिस जगह को चुना है, वह आज पूरी तरह मृत सागर के समान है। यहां तक कि पक्षी भी इसके ऊपर नहीं उड़ सकते। इस पानी में मछलियाँ नहीं हैं। तुम्हारा जीवन वैसा ही बन जाएगा। आप एक मृत सागर होंगे, जिसमें कोई जीवन नहीं होगा। ऐसा क्यों? आप ने वह चुना जो कि परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है।

जब इस्राइली लोग मिस्र में रहने के चार सौ साल बाद वापस लौटे, फिलिस्तीन एक बगीचे की तरह था।
लूत सब कुछ खोकर सदोम से बाहर आया। अब्राहम परमेश्वर की विरासत पाने के लिए मिस्र से बाहर लौटा। तुम्हारा जीवन वैसा ही होगा।

पतरस ने यीशु को नहीं छोड़ा। वह यरूशलेम में एक खास आदमी बन गया। उनकी शिक्षा और सामाजिक स्थिति क्या थी? यह बहुत अधिक नहीं थी लेकिन पतरस ने यीशु के विचारों को नहीं छोड़ा। मुझे ऐसे विचार कहाँ मिल सकते हैं जो मुझे अनंत जीवन तक ले जा सकते हैं? वह एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया जहाँ से वह दूर नहीं जा सका। क्या आप उस जगह पर आए हैं? क्या आप कह सकते हैं, "जो कुछ भी हो, मैं परमेश्वर के विचारों को नहीं छोड़ूंगा। बाइबल ही मेरे दिल और घर पर राज करेगी! अगर परमेश्वर मुझे एक साथी देगा, तो वह व्यक्ति भी परमेश्वर के इस काम में हिस्सा लेगा। उस व्यक्ति को परमेश्वर के विचारों को बिगाड़ने के लिए नए विचार नहीं लाने चाहिए "?

- एन. दानियल।

इसमें अपना नाम रखो!

रूथ बेल ग्राहम 2 सितंबर, 1933 को अच्छी तरह याद करती हैं। वह तेरह वर्ष की थी। उसके पिता, चीन में एक मिशनरी सर्जन, और उसकी माँ उसे उत्तर कोरिया के प्योंगयांग में स्थित बोर्डिंग स्कूल भेज रहे थे। रूथ के लिए, यह एक क्रूर विदाई का समय था, और उसने जोर देकर प्रार्थना की कि वह सुबह से पहले मर जाए। लेकिन सुबह आई, उसको प्रार्थना का जवाब न मिला, और उसने अपने झोलों को पकड़ लिया और नदी के किनारे की ओर कूच किया। वह उन सब को छोड़ रही थी जिनसे वह प्यार करती थी और परिचित थीः जिसमें उसके चीनी दोस्त, मिशनरी, उसके माता-पिता, उसका घर, उसकी यादें। नागासाकी मारू ने उसे धीरे-धीरे से नीचे वाँग्पू नदी से यांग्त्ज़ी नदी और वहाँ से पूर्व चीन सागर में ले गए।

एक हफ्ते बाद वह अपने सादे और कठिन छात्रावास में रहने लगी। घर से बाहर रहने की खिन्नता की लहरों ने उसे मथते झाग की तरह घेर लिया। रूत दिन में समय व्यस्त रहती थी, लेकिन शामें उसके लिए कठिन थीं। कई रातों, कई हफ्तों वह अपना सिर अपने तकिए में रखकर लेती और अपने सोने के लिए रोती थी। वह बीमार पड़ गई, और अपनी कमजोरी में उसने भजन संहिताओ को पढ़ते हुए 27 :10 भजन संहिता में शांति पाई: "मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।।"

चोट और भय और संदेह का दबाव उस पर बना रहा। अंत में, हताश होकर, वह अपनी बहन रोजा के पास गई, उसने प्योंगयांग में भी नामांकन करवाया। "मुझे नहीं मालूम कि तुमको क्या करने को कहना है" रोसा ने मामले का वास्तविक ढंग से जवाब दिया, "कि तुम बाइबल से कुछ

वचन लेकर उसमें अपना नाम रखो। हो सकता है कि यह तुम्हारी मदद करे?" रूथ ने अपनी बाइबल उठाई और एक मन पसंद अध्याय, यशायाह 53 खोला, और उसमें अपना नाम रख दिया: "लेकिन वह रूत के अपराधों के कारण घायल किया गया ; उसके कोड़े खाने से रूत ठीक हो गई है।" उसका दिल खुशी के मारे उछला, और स्वस्थ होने लगी।

-चुना हुआ

उसको मुझे दे दो

मिशनरी ई. स्टेनली जोन्स का जीवन, जिनकी मृत्यु 1973 में हुई थी, लंबे समय से चिंता की वजह से लगभग समाप्त होने पर था। जब वह पहली बार भारत आए थे, तो जोन्स ने खुद को काम और चिंता में लगा हुआ पाया। "मैं दिमाग और नसों की थकान से बुरी तरह पीड़ित था," उन्होंने बाद में लिखा, "मैं एक बार नहीं, बल्कि कई बार बेहोश हो गया।" जहाज से अमेरिका लौटते समय वे फिर बेहोश हो गये। डाक्टर ने उन्हें आराम करने को कहा। एक साल के आराम के बाद उन्होंने भारत लौटने की कोशिश की, लेकिन वापसी यात्रा पर नसों के एक गट्ठर बन गये और मुंबई में एक टूटे हुए आदमी के जैसे पहुंचे। उनके सहयोगियों ने उन्हें चेतावनी दी कि इस तरह की चिंताजनक स्थिति में लगातार सेवा जारी रखना उनके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक बन सकता है।

एक रात प्रार्थना करते हुए, भावनात्मक अंधेरे में टटोलते हुए, जोन्स एक आवाज को सुना जो उससे पूछती थी, "क्या आप खुद ही इस काम के लिए तैयार हैं, जिसके लिए मैंने आपको बुलाया है?"

"नहीं, परमेश्वर," जोन्स ने कहा, "मैं मरने पर हूँ। मैं अपने जीवन के अंत पर पहुँच गया हूँ। "

आवाज ने कहा, "अगर आप वह मेरे हाथों में दे दें और इस बारे में चिंता नहीं करेंगे, मैं इसका ख्याल रखूंगा।"

जोन्स ने जवाब दिया। "परमेश्वर, मैं ये सौदा यही तय करता हूं।" स्टेनली जोन्स पर शांति का एक बड़ा भाव छा गया, भरपूर जीवन के एक बहाव ने उन्हें मानो पैरों से उखाड़ते नीचे गिरा दिया। उनकी शक्ति वापस लौट आई। वे उत्साह से उछल पड़े और उन्होंने फिर जीवन में अपना काम एक ऐसी शक्ति के साथ किया, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं जाना था। जोन्स भारत में जीवनभर सेवा करने में लगे रहे, कई किताबें लिखीं, और दुनिया भर में अनेकों की सेवा की। बाद में उन्होंने लिखा, "यह एक बात जो मुझे पता है: मेरा जीवन उस रात पूरी तरह बदल गया था और ऊँचा किया गया ... जब मैं बड़ी कमजोरी और हताशा की गहराई में था, एक आवाज ने मुझसे कहा: "अगर आप उसे हाथों में दे दें और इसके बारे में चिंता न करें, मैं इसका ख्याल रखूंगा, और मैंने जवाब दिया, परमेश्वर, मैं ये सौदा यही तय करता हूं। '"

अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा।।... और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।"(भजन 55:22 और 1 पतरस 5: 7)।

चिंता वह ब्याज है जिसे हम कल की परेशानियों पर चुकाते हैं।

- ई. स्टेनली जोन्स

यीशु का दिया पहाड़ी उपदेश

मत्ती अध्याय 7 - पवित्र बाइबल

1 दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।
2 क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।
3 तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?।
4 और जब तेरी ही आंख मे लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं।
5 हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।।
6 पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें और पलट कर तुम को फाड़ डालें।।
7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।
9 तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे?
10 वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे?
11 सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?
12 इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्तओं की शिक्षा यही है।।